यात्रावृत्तांत

फणीश्वरनाथ रेणु के गाँव में एक दिन

- **बैंत्सै फ़ुश्तोश**

हिन्दी साहित्य के प्रमुख रचनाकार, फणीश्वरनाथ रेणु की कथाएँ मुझे सालों से बहुत प्रिय हैं। मैं उनकी रचनाओं से पहली बार हंगरी की राजधानी में स्थित ऐओत्वोश लोराण्ड विश्वविद्यालय के छोटे भारतीय अध्ययन विभाग में मिला था। इस 'साहित्यिक मुलाक़ात' को कोई पाँच साल बीत गए और अब रेणु का साहित्य मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। एक ओर, रेणु की रचनाएँ पढ़कर मैं हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति को नज़दीक से देख पाता हूँ। दूसरे, रेणु की अद्भुत भाषा और साहित्यिक अभिव्यक्ति पाठकों पर गहरा प्रभाव डालती है। फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य पढ़कर मेरे मन में बिहार के प्रति एक खिंचाव, एक विशेष मोह पनप उठा – यही कारण है कि मैंने फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य अपने पी.एच.डी शोध के विषय के रूप में भी चुन लिया। जब से भारत के वडोदरा शहर आकर मैं अपना पी.एच.डी कर रहा हूँ, स्पष्ट है कि मुझे रेणु जी का साहित्य अच्छी तरह से समझने के लिए एक दिन उनके गाँव, उत्तर-बिहार के औराही हिंगना जाना था। कुछ तैयारियों के बाद यह दिन अंततः 2024 के मई में आया।

फणीश्वरनाथ रेणु की आदमक़द प्रतिमा, सिमराहा

गुजरात से निकलकर इस वसंत में मैं उत्तर और पूर्व-भारत के कुछ प्रमुख, शोध-विषय से सम्बन्धित पुस्तकालयों में गया। मेरी इस शोध-यात्रा का एक पड़ाव बिहार था, जहाँ मिथिलांचल और इसमें रेणु-ग्राम, अर्थात् औराही हिंगना एक प्रमुख आकर्षण था। साहित्य पढ़कर ही मुझे भरोसा था कि यह देहाती दुनिया मेरे लिए नया अनुभव रहेगा। विदेशी होकर मैं भारत के किसी भी अनजान इलाके में जाते समय एक विशेष उत्सुकता महसूस करता हूँ। इस बार यह उत्सुकता कुछ अधिक ही थी। पाँच साल से रेणु के साहित्य पर काम करके, इस विषय पर तमाम आलेख और विश्लेषण, रिपोर्ताज और यात्रा-वर्णन पढ़कर तथा रेणु-परिवार के विभिन्न साक्षात्कार देखकर कोलकाता से फारबिसगंज जाने वाली रेल-गाड़ी में बैठकर मुझे लग रहा था कि मैं किसी अनजान ज़िले नहीं परंतु घर जा रहा हूँ।

कटिहार, पूर्णियाँ, अररिया कोर्ट, सिमराहा, फारबिसगंज ... इन सभी शहरों का नाम रेणु की विभिन्न रचनाओं में सामने आते हैं। रेल-गाड़ी की खिड़की से रेणु के मिथिलांचल का वही दृश्य गुज़र रहा है, जो मेरी कल्पना में कितनी बार झलकता था। खेतों में काम करते हुए किसान और हरी घास चरती हुई गायें, उनके पास रंगीन कपड़ों में खड़ी नारियाँ, तालाब और पोखर में खेलते हुए बच्चे... यह वही अनोखी ग्रामीण दुनिया है, जो मेरे लिए अब तक सिर्फ़ किताबों के पन्नों में मौजूद थी। फारबिसगंज पहुँचने के बाद कस्बे की गलियों में घूमकर मैं मन-ही-मन रोमांचित हो रहा था – मैं आखिरकार रेणु जी के अंचल में, उनके घर में आया। रेणु-ग्राम देखने का पुराना स्वप्न यथार्थ हो रहा था।

16 मई 2024 –औराही हिंगना जाने का यह शुभ दिन, किसी तीर्थ-यात्रा से कम नहीं था। लम्बी प्रतीक्षा और उत्सुकता की वजह से सुबह जल्दी उठकर तैयार हुआ। दिल में उमंगों की तरंगें उठ रही थीं। मेरी ट्रेन फारबिसगंज जंक्शन से सिमराहा के लिए थोड़ी देर से निकली। इंतज़ार करते-करते सिमराहा के कुछ लड़कों से बातचीत शुरू हुई। ये लड़के सिमराहा के श्री फणीश्वरनाथ रेणु इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र थे, जिनके साथ रेणु जी का व्यक्तित्व एवं उनका साहित्य तुरंत हमारा विषय बन गया। सुबह का यह दृश्य भी दिखाता है कि फणीश्वरनाथ रेणु का नाम इस अंचल में जादू से भरा हुआ है – बूढ़े चायवाले, युवा दुकानदार, टेक्नोलॉजी के छात्र, नेपाल से आए लोग, यानी सभी को पता है रेणु कौन हैं और उनका घर किस तरफ़ पड़ता है। मेरी चिंता हवा में उड़ गई: राह भटकना एकदम असंभव है।

सिमराहा एक छोटा-सा शहर है, एक कस्बा जहाँ से औराही हिंगना का रास्ता शुरू होता है। यहाँ रेणु की उपस्थिति महसूस की जा सकती है: उनके नाम पर कई स्मारिकाएँ हैं जैसे रेणु-ग्राम मार्ग या कस्बे की सीमा में खड़ा रेणु-द्वार । स्टेशन के पास एक चौक है, जिसके बीचोंबीच रेणु की चमकती हुई आदमक़द प्रतिमा खड़ी है। जिसको रेणु के गाँव जाना है, उसको इसी मूर्ति के दाएँ से गुज़रना है। यहाँ का दृश्य देखकर ऐसा लग सकता है कि बिना वाहन ही गाँव जाना पड़ेगा, जो कि मुश्किल है, क्योंकि औराही हिंगना और सिमराहा के बीच कोई 4 किलोमीटर की दूरी है तथा इस रास्ते पर कुछ छोटे-छोटे गाँव बसे हैं। किन्तु रेणु-साहित्य प्रेमियों को परेशान होने की आवश्यकता नहीं है: सिमराहा से रिक्शा लेकर बीस-तीस मिनट में रेणु के गाँव पहुँचा जा सकता है।

रेणु के साहित्य से परिचित यात्री जानता है कि ग्रामीण माहौल, अर्थात् अंचल की विशेष लोक-संस्कृति, बिहारी प्रकृति का सौन्दर्य और शहरों के शोर से विरक्त शांति रेणु के साहित्य में रेखांकित है। औराही हिंगना की ओर जाते-जाते दृश्यमान परिवेश से मैं समझ पाया कि रेणु वास्तव में क्या-क्या लिखते हैं। भारत घूमकर मैं गाँव देख चुका हूँ, लेकिन रेणु-अंचल का गाँव

एक अलग अनुभव रहा। इन राहों पर चलकर उनके नायक-नायिकाएँ वास्तविक रूप लेकर सामने आते हैं। उस दिन देखे हुए बिहार के गाँवों का समूह मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा। खेतों में गायें और भैंस घूम रहे थे, खेतों के किनारे 'भिटहुर' खड़े थे, विशाल पेड़ों की छाँव में किसान ताश खेल रहे थे, घर के आँगनों में बच्चे हँस रहे थे, कुछ नारियाँ घर के कामों में व्यस्त दिख रही थीं। सड़कों के हर कोने में एक-एक छोटे पर प्यारे-से मंदिरों के दर्शन हो रहे थे।

औराही हिंगना जाने का रास्ता - एक दृश्य

यातायात की आवाज़ क्रमशः हवा में खो गई। पक्की सड़क धीरे-धीरे कच्ची डगर में बदलती जा रही थी। यह औराही हिंगना के समीप आने का संकेत था। जी हाँ, रेणु-ग्राम के आगमन का प्रमाण सामने था। गाँव की सीमा पर पहली इमारत है एक माध्यमिक स्कूल, जिसके बोर्ड में लिखा है रेणु गाँव! स्कूल के आँगन में एक मूर्ति है: रेणु की! गाँव में प्रवेश करते ही, घरों के पास खड़े लोग तुरंत पूछने लगते हैं: "रेणु जी?" "रेणु जी के घर जाना है?" – यहाँ की हवा में रेणु की खुशबू है, कण-कण में रेणु जीवित हैं। उनके गाँव में ही नहीं, किन्तु सिमराहा एवं फोरबिसगंज शहरों में भी मैंने अनुभव किया कि इतने लंबे समय के बाद भी अंचल के जन-जन की आँखों में रेणु जी के लिए सम्मान और प्यार झलक रहा है। सब से पहले मैंने रेणु के गाँव की 'रेणु' से परिचय प्राप्त किया। रेणु जी के घर जाने से पहले मन को तैयार करना है। गाँव की गलियों में किसानों की मुस्कुराहट और स्कूल का यूनिफॉर्म पहने हुए छोटे बच्चों की आश्चर्य तथा अपरिचय का भाव भरी आँखें मेरा स्वागत कर रही थीं। कभी-कभी एक प्रश्न सुनाई पड़ा: "आप कहाँ के हैं?"। परन्तु वे मुख्यतः चुपचाप सहयात्री बनकर कुछ देर तक मेरे साथ चले आते थे। मुझे तुरंत पता चला कि सिर्फ़ बड़े-बूढ़े ही नहीं, किन्तु एकदम छोटे बच्चे भी जानते हैं कि गाँव में विश्व-प्रसिद्ध लेखक कहाँ रहते थे। ग्रामीण डाक घर की दीवार पर रेणु जी की तस्वीर लटकी है, इसके सामने उनकी समाधि देखने को मिलती है। औराही हिंगना घूमने के बाद गाँव के सन्नाटे और आम के पेड़ों की शीतल छाँव से गुज़रकर मैंने फणीश्वरनाथ रेणु के घर की तरफ़ क़दम बढ़ाया।

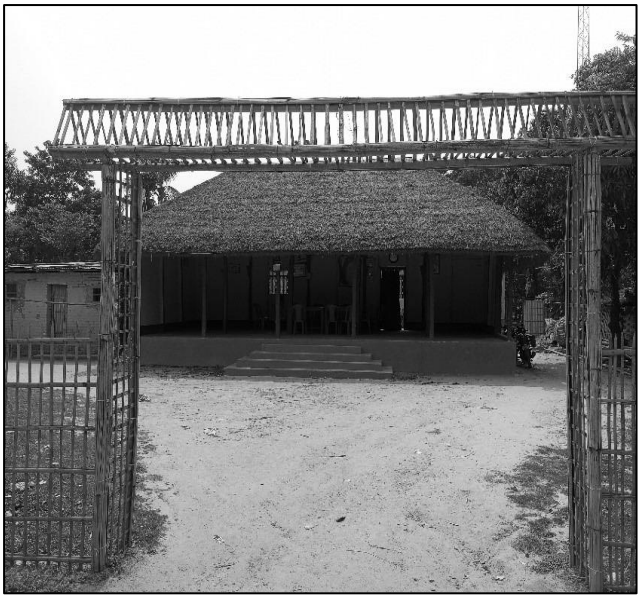

रेणु के घर की पहली नज़र

रेणु जी का घर! साहित्य के छात्रों के लिए अपने प्रिय रचनाकार के घर में प्रवेश करने से बड़ा सम्मान नहीं हो सकता। और तो और उस दिन मुझे रेणु के बड़े बेटे, आदरणीय पदम पराग रॉय से मिलने का मौका भी मिला। उन्होंने मुझे बरामदे की खुली हवा में बिठाया। परिचय देने के बाद रेणु के व्यक्तित्व, उनके साहित्य तथा औराही हिंगना और पूर्वी पूर्णियाँ, यानी आज के अररिया ज़िले के परिवर्तित जीवन की बातचीत शुरू हुई। उनके शब्दों में रेणु के सोच-विचार प्रतिबम्बित हो रहे थे। पदम जी के राजनीतिक कार्य में रेणु की विरासत है। रेणु के साहित्यिक संदेश के संबंध में प्रश्न पूछने पर उन्होंने मुझसे ही उत्तर माँगा और मेरा उत्तर सुनकर उन्होंने प्रशंसा के भाव से कहा कि 'मैं रेणु का साहित्य अच्छे से समझता हूँ'। पदम पराग रॉय जी से इस बातचीत ने साबित किया कि मेरा शोध-कार्य सही रास्ते पर चल रहा है। बाद में मुझे रेणु जी का घर देखने की अनुमति मिली – एक प्रेरित माहौल, प्रेरणा से भरा वही कमरा, जिसमें अधिकांश कहानियों और उपन्यासों का सृजन किया गया था। दिन ढलते-ढलते विदा लेने का समय आया। सिमराहा से होकर फारबिसगंज लौटने के लिए रेणु का परिवार मुझे औराही हिंगना के चौक तक विदा करने आया और रिक्शे में बिठाकर रवाना किया। मन उदास था, बिल्कुल वैसा ही जैसे अपने परिवार से बिछड़कर होता है। अब मैं गाँव के लोगों के साथ स्टेशन की ओर वापस जा रहा था। रेणु के गाँव की यह 'पहुनाई' देर तक और दूर तक मेरे साथ रहेगी।

फणीश्वरनाथ रेणु के गाँव में एक यादगार दिन! एक अच्छा अनुभव, जिसने मुझे रेणु के साहित्य को और नज़दीक से समझने का अवसर दिया। दिन के अन्त तक मिथिलांचल का यह ज़िला मेरा और प्रिय बन गया।

- पी. एच. डी शोध छात्र, महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा